**पु॰ना International School**
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

**Std-VI** **Subject-Hindi**

**PERIODIC ASSESSMENT-3 (2021-22)**

**(अपठित-विभाग)**

## प्र-1 अपठित गदयांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1) किसी शहर में एक नट मण्डली आई हुई थी| लोग भीड़ लगाकर नट के करतब देख रहे थे| भीड़ में दो चोर भी थे| उन्होंने देखा कि नट एक पतली सी रस्सी पर बड़े ही आराम से बिना किसी सहायता के चल रहा है| दोनों चोरो ने सोचा कि यदि यह नट हमारे साथ आ जाये तो चोरी करने में बड़ी सहायता मिलेगी| यह सोचकर दोनों चोरों ने नट से बात की| नट ने उन्हें मना कर दिया| चोर उसे बाँधकर अपने साथ ले गए, और रात में एक सेठ की हवेली के नीचे ले जाकर चाकू दिखाते हुए कहा "इस मुंडेर पर चलकर तुम अंदर जाकर दरवाजा खोलो". मुंडेर इतनी पतली थी कि उस पर कोई इंसान तो क्या कोई छोटा जानवर भी नहीं चल सकता था| चोर उस पर चढ़ा और एक कदम चलकर धड़ाम से नीचे गिर पड़ा| दोनों चोर चिल्लाते हुए बोले "तमाशा दिखाते हुए तो तुम पतली सी रस्सी पर चल रहे थे, यहाँ कैसे गिर पड़े? " चोर मासूमियत से बोला "ढोल बजाओ ढोल, क्योंकि मैं ढोल बजने पर ही रस्सी पर आराम से चल पाता हूँ. " नट क़ी बात सुनकर चोरों ने अपना सिर पीट लिया|

प्रश्न 1- शहर में कौन सी मंडली आई थी?
क-भजन मण्डली ख-नाटक मण्डल
ग-बाल मण्डली घ-नट मण्डली

प्रश्न 2-नट किस पर बड़े आराम से चल रहा था?
क-एक पतली सी रस्सी पर ख-मोटे डंडे पर
ग- मुंडेर पर घ-पतले तार पर

प्रश्न 3-बताइए कि चोरों ने क्या सोच कर नट से बात की?

प्रश्न 4- नट के मना करने पर चोरों ने उसके साथ कैसा बर्ताव किया?

प्रश्न 5 -गद्यांश में आये विशेषण शब्द लिखिए. (कोई दो)

**उत्तर-पत्र**

उत्तर 1-घ

उत्तर 2-क

उत्तर 3- यदि यह नट हमारे साथ आ जाए तो चोरी करने में बड़ी सहायता मिलेगी. यह सोचकर दोनों चोरों ने नट से बात की|

उत्तर 4-नट के मना करने पर चोर उसे बाँधकर अपने साथ ले गए|

उत्तर 5- विशेषण 1- पतली 2- छोटा

2) आश्चर्य की बात है कि मनुष्य कभी अपने आप से यह प्रश्न नहीं करता कि उसे क्या चाहिए? सामान्य रूप से वह जानता है कि उसे अच्छा काम धंधा चाहिए, चाहिए सुख वैभव और विलास चाहिए लेकिन यह सब

ऊपर ही बातें हैं. सब बातों के नीचे एक रहस्य और है – मनुष्य का परमात्मा से कटा होना. यह करना ही उसके सब दुखों का कारण है. इसी दुख की पूर्ति के लिए कभी वह रिश्ते नाते जोड़ता है, कभी सांसारिक सफलता पाकर खुश होता है. लेकिन सफलता का सुख भी उसे पूरी संतुष्टि नहीं दे पाता. गौतम बुद्ध को भी सांसारिक सुख पसंद नहीं कर पाए थे| तब उनके मन में प्रश्न उठा था कि आखिर मुझे संतोष कैसे मिलेगा| इस प्रश्न का उत्तर उन्हें बड़ी साधना से मिला| गौतम बुद्ध परमात्मा को नहीं मानते थे| उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि करुणा से मानव जीवन सुखी हो सकता है| करुणा करने वाला अपने लिए नहीं दीन दुखियों के लिए जीता है. इसी में उसे आनंद मिलता है. वास्तव में मानव का लक्ष्य यही आनंद पाना है|

1. अपठित गद्यांश का शीर्षक दीजिए|
2. सामान्य तौर पर मनुष्य जीवन में क्या चाहता है?
3. मनुष्य जीवन का वास्तविक कष्ट क्या है?
4. मनुष्य अपने सांसारिक दुख को दूर करने के लिए क्या उपाय करता है?
5. गौतम बुद्ध ने मानव जीवन को सुखी बनाने का कौन सा उपाय खोजा?
6. मानव जीवन का सच्चा लक्ष्य क्या है?

**उत्तर–**

1. अपठित गद्यांश का शीर्षक – मानव जीवन का लक्ष्य
2. सामान्य तौर पर मनुष्य अच्छा काम धंधा, सुख वैभव और विलास के साधन चाहता है|
3. मनुष्य जीवन का वास्तविक कष्ट, परमात्मा से कटा होना है|
4. अपने सांसारिक दुखों को दूर करने के लिए संसार एक रिश्ता और सफलताओं में लीन रहता है|
5. गौतम बुद्ध ने मानव जीवन को सुखी बनाने के लिए करुणा अपनाने के लिए कहा|
6. मानव जीवन का सच्चा लक्ष्य है – आनंद की प्राप्ति|

3) नाव गर्व से सर उठा कर नदी की लहरों पर दौड़ती चली जाती है, और पानी उसका जयकार करता हुआ उसे अपने हाथों पर उठाएं रहता है, किंतु जब नाव डूबती है तो अपने ही छोटे से छेद के कारण जो धीरे-धीरे कब हो गया वह जान ही नहीं पाती और छेद हो जाने पर वही पानी उसे खींच कर डुबो देता है| व्यक्ति भी जब डूबता है तो अपने ही किसी छेद के कारण – छेद के कारण जिसे उसने मामूली सा समझ कर अनदेखा कर दिया था. हर विपत्ति हम पर तभी हावी होती है, ढीले पड़ जाते हैं. यदि हम प्रतिदिन सजग होकर इस बात पर दृष्टि दौड़ आते रहे कि हमारे प्रयासों में कहीं कोई कमी तो नहीं रह गई, पराजित नहीं कर सकता| अपनी कल को कायर और निकम्मे लोग याद करके पछताते रहते. जहाँ हम कल खड़े थे वही खड़े रहना अपराध है. जो कुछ और जिस रूप में हमने कोई काम कल किया था, उससे कहीं बेहतर करने का संकल्प और प्रयत्न करना हमारा धर्म होना चाहिए|

1. अपठित गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए|
2. नोखा का उदाहरण देकर क्या संदेश दिया गया है?
3. कोई भी विपत्ति हम पर कब होगी होती है?
4. निकम्मे और कर्मशील लोगों की क्या-क्या विशेषताएं बताई गई है?
5. छेद किसका प्रतीक है? इसे भरने के क्या उपाय हैं?

**उत्तर** –

1. अपठित गद्यांश का शीर्षक- **सफलता का रहस्य**
2. नाव का उदाहरण देकर लेखक ने यह संदेश दिया है कि छेद अपनी कमी को दूर करते रहो, सदा तुम्हारे साथ रहेगी.
3. हम पर कोई विपत्ति तब हावी होती है जब हम अपनी कमियों को अनदेखा कर उनके प्रति लापरवाह हो जाते हैं.
4. निकम्मे लोग अपनी कमियों को अनदेखा कर अपने प्रयासों में ढील दे देते हैं, कर्मशील लोग सजग होकर अपनी हर कमी को दूर कर अपने प्रयासों को और अधिक बढ़ा देते हैं.

5. छेद कमियों का प्रतीक है. इसे भरने का एक मात्र उपाय है कि इसके प्रति सजग होकर इसे दूर करने के आवश्यक कदम उठाने चाहिए.

## लेखन विभाग
## अनुच्छेद

### 1) पुस्तकों का महत्व

पुस्तकें हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण रोल अदा करती हैं क्योंकि पुस्तकों से हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है। पुस्तकें हमारी अच्छी मित्र होती हैं एक पुस्तक जितना वफ़ादार और कोई नहीं होता है। एक पुस्तक ज्ञान तो हमें देती ही हैं इससे हमारा अच्छा ख़ासा मनोरंजन भी हो जाता है। इसीलिए पुस्तकों को हमारा मित्र कहना गलत नहीं होगा।पुस्तकें तो प्रेरणा का भंडार होती हैं इन्हें पढ़कर ही हमें जीवन में महान कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। पुस्तक अपने विचारों और भावनाओं को दूसरों तक पहुंचाने का सबसे अच्छा साधन है। पुस्तकें प्रेरणा की भंडार होती हैं।उन्हें पढ़कर जीवन में कुछ महान कर्म करने की भावना जागती है। महात्मा गाँधी को महान बनाने में गीता, टालस्टाय और थोरो का भरपूर योगदान था। भारत की आज़ादी का संग्राम लड़ने में पुस्तकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। प्रत्येक छात्र को अच्छी और शिक्षाप्रद पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए। इससे विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण पर गहरा असर पड़ता है। इस पुस्तक को पढने से धर्म के मार्ग पर चलने की सीख मिलती है। इसलिए मेरी दृष्टि में "रामचरितमानस" बहुत ही अच्छी पुस्तक है। "रामचरितमानस" में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र का वर्णन है। राम एक आदर्श पुरुष थे। वे चौदह वर्ष तक लक्ष्मण व सीताजी सहित वन में रहे। वे एक आदर्श राजा थे। उन्होंने प्रजा की बातों को बहुत महत्व दिया। राम का शासनकाल आदर्शपूर्ण था, इसलिए उनका शासन राम राज कहलाता है। सीता एक आदर्श नारी थीं। लक्ष्मण की भातृभक्ति प्रशासंनीय है। पुस्तकें चरित्र निर्माण का सबसे अच्छा साधन होती हैं अच्छे विचारों , प्रेरणादायक कहानियों से भरपूर किताबों से देश की युवा पीढ़ी को एक नयी दिशा दी जा सकती है। इनसे ही देश में एकता का पाठ पढ़ाया जा सकता है। इसीलिए पुस्तकें ज्ञान की बहती हुई गंगा हैं जो कभी नहीं थमती। किन्तु देखा गया है के कुछ पुस्तकें ऐसी भी होती हैं जो हमारा गलत मार्ग दर्शन करती हैं इसीलिए हमें ऐसी पुस्तकों को पढने से बचना चाहिए हमेशा ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक पुस्तकें ही पढनी चाहिए ।

### 2) वृक्षारोपण

वृक्ष प्रकृति की अनुपम देन हैं। ये पृथ्वी और मनुष्य के लिए वरदान हैं। किसी क्षेत्र विशेष में अनेक वृक्षों का समूह वन कहलाता है। वन हमारे लिए ईश्वर की सबसे विशिष्ट भेंट हैं। ये पृथ्वी और देश की सुंदरता बढ़ाते हैं। ये देश की सुरक्षा और समृद्धि में भी सहायक होते हैं। वृक्ष लगाना उसे पूजना उसकी सुरक्षा करने की महत्ता पुराने जमाने से ही चली आ रही है। पुराणों के अनुसार, एक वृक्ष लगाने का उतना ही पुण्य मिलता है जितना दस गुणवान पुत्रों के सुयश से। आज सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि हम पेड़ों के इसी महत्त्व को भूलते चले जा रहे हैं। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। वन काटे जा रहे हैं और उनके स्थान पर मैदान बनाकर बस्तियाँ बसाई जा रही हैं। इसका सबसे बुरा प्रभाव यह हो रहा है कि प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने लगा है। वनों से मिलने वाले लाभ अब समाप्त हो रहे हैं। वनों से मिलने वाली इमारती लकड़ी, लाख, रबर, गोंद आदि भी कम हो गए हैं। वनों के अभाव में अनेक लोगों की रोजी-रोटी भी समाप्त हो गई है। वन भूमि का कटाव रोकने में सहायक होते हैं तथा नदियों की गति को नियंत्रित रखते

हैं।वनों की बदौलत भूमि के उपजाऊ कण सुरक्षित रहते हैं लेकिन आज इन सभी चीजों का अभाव हो गया है। अतः आज अधिक-से-अधिक पेड़ लगाकर पर्यावरण को सुरक्षित कर हमारे जीवन को खुशहाल बनाने की आवश्यकता है।

### 3) हमारे राष्ट्रीय त्योहार

उत्सव मनाना मानव का जन्मजात स्वभाव है। यह स्वभाव पर्व और त्योहारों के मनाने के रूप में ही प्रत्यक्ष रूप से व्यजित होता है। पर्व और त्योहार किसी भी देश की आंतरिक ऊर्जा, आनंद की भावना और जीवन की जीवंतता के परिचायक होते हैं, पर कुछ ऐसे पर्व और त्योहार भी हैं, जिन्हें सारा राष्ट्र एक साथ मिलकर मनाता है। ऐसे त्योहारों को ही राष्ट्रीय त्योहार कहा गया है। गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस और गांधी जयंती हमारे राष्ट्रीय त्योहार हैं। गणतंत्र दिवस प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को स्वतंत्र भारत का संविधान लागू होने की याद में धूमधाम से मनाया जाता है।राष्ट्रपति भवन के बाहर राजपथ पर राष्ट्रपति द्वारा तीनों सेनाओं आदि से सलामी लेना, परेड, अनेक प्रकार की भव्य झाँकियाँ और प्रदर्शन, रात को विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम दीपावली और आतिशबाज़ी इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। 15 अगस्त सन् 1947 के दिन हमारा देश स्वतंत्र हुआ, जिसकी याद में प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है। लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रध्वज फहराना, इसे सलामी देना तथा देश को संबोधित आदि इस त्योहार की प्रमुख गतिविधियाँ और विशेषताएँ हैं। 2 अक्टूबर महात्मा गाँधी का जन्म दिवस है। यह दिन उस महान विभूति को अपनी श्रद्धांजलि देने स्वरूप मनाया जाता है जिसने हमारे देश को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व लुटा दिया। इन सभी त्योहारों का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता और आंतरिक आनंद का भाव उजागर करना तो है ही, यह स्मरण रखना भी है कि मानवता, राष्ट्रीयता और उसकी स्वाधीनता से बड़ी कोई चीज़ नहीं।

## ➢ कहानी लेखन

### 1) सारस और लोमड़ी की कहानी

एक बार एक लोमड़ी ने अपने दोस्त सारस को खाने की न्यौता दिया और खाने में खीर बनाया और उसे बड़े थाली में परोस दिया फिर सारस और लोमड़ी थाली में परोसे खीर को खाने लगे थाली काफी चौड़ी थी जिससे सारस के चोच में खीर की थोड़ी ही मात्रा आ पाती थी जबकि लोमड़ी अपने जीभ से जल्दी जल्दी सारा खीर खा लिया जबकि सारस का पेट भी नही भरा था जिससे लोमड़ी अपनी चतुराई से मन ही मन खुश हुई तो फिर सारस ने भी लोमड़ी को खाने का न्योता दिया फिर अगले दिन सारस ने भी खीर बनाया और और लम्बे सुराही में भर दिया जिसके बाद दोनों खीर खाने लगे सारस अपने लम्बे चोच की सहायता से सुराही में खूब खीर खाया जबकि लोमड़ी सुराही लम्बा और उसका मुह छोटा होने के कारण वहा तक पहुच ही नही पाता जिसके कारण वह सुराही पर गिरे हुए खीर को चाटकर संतोष किया फिर इस प्रकार सारस ने अपने अपमान का बदला ले लिया और लोमड़ी को अपने द्वारा किये हुए इस व्यव्हार पर बहुत पछतावा हुआ ।

**कहानी से शिक्षा –** जैसे को तैसा की सोच आधारित यह कहानी हमे यही सिखाती है की हमे कभी भी किसी का अपमान नही करना चाहिए ऐसा अपमान अपने साथ भी हो सकता है।

### 2) सच्ची मित्रता

एक बहुत पुराना वृक्ष था, जो नदी के किनारे स्थित था। वह इतना विशाल था कि उसकी शाखाएँ नदी के ऊपर छाई थीं। उस वृक्ष पर एक मधुमक्खी रहती थी जिसने वृक्ष पर ही अपना निवास स्थान बना रखा था।

उसका जीवन बड़े आनंद से व्यतीत हो रहा था। एक दिन वह वृक्ष से गिर पड़ी तथा पानी में बहती हुई जा रही थी। उसने किनारे पर आने के लिए बहुत प्रयास किया परंतु वह किनारे पर नहीं आ पा रही थी। पानी का बहाव बहुत तेज था इसलिए वह उसमें बहती जा रही थी। कुछ दूरी पर एक कबूतर भी उसी वृक्ष पर रहता था। उसने देखा कि मधुमक्खी पानी में बहती जा रही है। तब उसे एक उपाय सूझा। उसने वृक्ष से एक पत्ता तोड़कर नदी में गिरा दिया जिसकी सहायता से मधुमक्खी सुरक्षित स्थान पर पहुँच गई।मधुमक्खी ने कबूतर को उसकी जान बचाने के लिए धन्यवाद दिया और इस प्रकार उन दोनों में दोस्ती हो गई। एक दिन एक शिकारी जंगल में शिकार की खोज में भटक रहा था। उसने उस कबूतर को देखा और उसे मारने के लिए निशाना लगाया। मधुमक्खी ने उस शिकारी को कबूतर का निशाना लगाते देखा तो उसे काट लिया। जिससे शिकारी का निशाना चूक गया और कबूतर की जान बच गई।इस प्रकार मधुमक्खी ने दोस्ती निभाते हुए अपने दोस्त की जान बचाई। कबूतर ने मधुमक्खी का धन्यवाद किया और फिर दोनों दोस्त मजे से रहने लगे।

**शिक्षा**: हमें सबकी सहायता करने का प्रयत्न करना चाहिए। संकट के समय मित्र की सहायता अवश्य करनी चाहिए।

## (व्याकरण-विभाग)

### ➢ क्रिया को पहचानकर नाम लिखिए।

| | |
|---|---|
| १-बच्चा सो रहा था। | अकर्मक क्रिया |
| २-गुड़िया काग़ज से घर बना रही है। | सकर्मक क्रिया |
| ३-चिड़ियाँ उड़ चलीं। | अकर्मक क्रिया |
| ४-बबलू चाँद देख रहा है। | सकर्मक क्रिया |
| ५-छात्र लौट आए। | अकर्मक क्रिया |
| ६-उमेश तबला बजा़ रहा है। | सकर्मक क्रिया |
| ७-मोहनने पत्र लिख लिया। | सकर्मक क्रिया |
| ८-रमेश पतंग उड़ाता है। | सकर्मक क्रिया |
| ९-रवि ने भिखारी को रोटी दी। | सकर्मक क्रिया |
| १०-मेरा मित्र शहर गया है। | सकर्मक क्रिया |
| ११-बिज़ली चमक रही है। | अकर्मक क्रिया |
| १२-वह बंदर को देखकर डर गया। | सकर्मक क्रिया |
| १३-मेरी बिटिया खाना बना रही है। | सकर्मक क्रिया |
| १४-वह हँसता है। | अकर्मक क्रिया |
| १५-माँ बच्चें को सुला रही है। | सकर्मक क्रिया |

### ➢ लोकोक्ति

1) अंधों में काना राजा (मूर्खा में कम पढ़ा लिखा व्यक्ति)
हमारे गाँव में एक कंपाउंडरे ही लोगों का इलाज करता है, सुना नहीं है-अंधों में काना राजा।
2) अंधा चाहे दो आँखें (जिसके पास जो चीज नहीं है, वह उसे मिल जाना)
आयुष को एक घर की चाह थी, वह उसे मिल गया ठीक ही तो है–अंधा चाहे दो आँखें।
3) अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत (काम खराब हो जाने के बाद पछताना बेकार है)

पूरे वर्ष तो पढ़े नहीं अब परीक्षा में फेल हो गए, तो आँसू बहा रहे हो। बेटा, अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।।

4) आटे के साथ घुन भी पिस जाता है (अपराधी के साथ निर्दोष भी दंड भुगतता है)
क्षेत्र में दंगा तो गुंडों ने मचाया, पुलिस दुकानदारों को भी पकड़कर ले गई। इसे कहते हैं, आटे के साथ घुन भी पिस जाता है।

5) आगे नाथ न पीछे पगहा (जिम्मेदारी का न होना)
पिता के देहांत के बाद रोहन बिलकुल स्वतंत्र हो गया है। आगे नाथ न पीछे पगहा।।

6) धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का (कहीं का न रहना)
बार-बार दल-बदल करने वाले नेता की स्थिति धोबी के कुत्ते ' जैसी हो जाती है, वह ने घर का न घाट का रह जाता है।

7) खोदा पहाड़ निकली चुहिया (अधिक परिश्रम कम लाभ)
सारा दिन परिश्रम के बाद भी कुछ नहीं मिला।

8) आ बैल मुझे मार (जान बूझकर मुसीबत मोल लेना)
बेटे के जन्मदिन पर पहले सबको बुला लिया अब खर्चे का रोना रोता है। सच है आ बैल मुझे मार।

9) नाच न जाने आँगन टेढ़ा (काम तो आता न हो, दूसरों में दोष निकालना)
काम करना तो आता नहीं, कहते हो औजार खराब है। इसी को कहते हैं नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

10) भीगी बिल्ली बनना (दबकर रहना) – लाला की नौकरी करना है, तो भीगी बिल्ली बनकर रहना पड़ेगा।

## ➢ क्रिया-विशेषण

### 1) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण

- बच्चे ऊपर खेलते हैं।
- तुम बाहर बैठो।
- तुम अन्दर जाकर बैठो।
- हम छत पर सोते हैं।
- शशि मुझसे बहुत दूर बैठी है।
- तुम अपने दाहिने ओर गिर जाओ।
- अब वहाँ अकेला मजदूर था।
- वह ऊपर बैठा है।
- मैं बाहर खेलता हूँ।
- मैं पेड़ पर बैठा हूँ।
- मुरारी मैदान में खेल रहा है।

### 2) कालवाचक क्रिया-विशेषण

- आज बरसात होगी।
- वह कल आया था।
- तुम कल विद्यालय जरूर जाना।
- वह सोमवार को क्रिकेट खेलेगा।
- वह चार हफ्ते बाद विदेश से लौटा है।
- तुम बार-बार क्यों समझाते हो?
- राम कल मेरे घर आएगा।
- तुम अब जा सकते हो।
- आपको आज ही काम पूरा कर लेना चाहिए।
- वह हर दोपहर को घूमने निकल जाता है।
- वह जाने कब आएगा?

### 3) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण

- अधिक पढो।
- कम बोलो।
- इतना मत बोलो थक जाओगे।
- ज्यादा सुनो।
- अधिक पियो।

**4) रीतिवाचक क्रियाविशेषण**

- अचानक काले बादल घिर आए।
- रमेश धीरे -धीरे चलता है।
- आप ठीक से बैठिये।
- धीरे धीरे चलें।
- हरीश ध्यान पूर्वक पढ़ रहा है।
- वह तेज भागता है।
- चौंककर क्यों उठ गए?
- उसने फुसफुसाते हुए कहा।

## (साहित्य-विभाग)

### ➢ अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

**1- महल में खुशी का कारण क्या था?**

उत्तर- विवाह के बाद रानी लक्ष्मीबाई का महल में आना खुशी का प्रमुख कारण था।

**2- डलहौज़ी प्रसन्न क्यों था?**

उत्तर- क्योंकि नि:संतान राजा गंगाधर राव की मृत्यु होने पर झाँसी का अधिकार स्वतः ही अंग्रेज़ी सरकार को मिल जाना था इसलिए डलहौज़ी प्रसन्न था।

**3- ब्रिटिश सरकार ने झाँसी के दुर्ग पर झंडा क्यों फहराया?**

उत्तर- क्योंकि वहाँ के राजा नि:संतान मृत्यु को प्राप्त हुए।

**4- इस दुनिया के लोग कैसे हैं?**

उत्तर- इस दुनिया के अधिकांश लोग संवेदनहीन हैं। वे अपनी क्षमताओं की कद्र करना नहीं जानते।

**5- हेलेन केलर अपने मित्रों की परीक्षा क्यों लेती है?**

उत्तर- हेलेन केलर अपने मित्रों की परीक्षा यह परखने के लिए लेती है कि वे क्या देखते हैं।

**6–लेखिका को झरने का पानी कब आनंदित करता है?**

उत्तर- लेखिका जब झरने के पानी में अँगुलियाँ डालकर उसके बहाव को महसूस करती है, तब वह आनंदित हो उठती है।

**7- एक रोड़ा दरिया में लुढ़कता-लुढ़कता किस रूप में बदल जाता है?**

उत्तर- रोड़ा दरिया में लुढ़कते-लुढ़कते छोटा होता जाता है और अंत में रेत का कण बन जाता है।

**8 - पत्थर अपनी कहानी हमें कैसे बताते हैं?**

उत्तर- पत्थरों की कहानी उनके ऊपर ही लिखी हुई है। यदि हमें उसे पढ़ने और समझने की दृष्टि हो तो हम यह कहानी जान सकते हैं।

**9- अंग्रेज़ों ने भारत के किन-किन क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था?**

उत्तर- अंग्रेजों ने भारत के कई हिस्सों पर अधिकार कर लिया था। उनमें से प्रमुख हैं-दिल्ली, लखनऊ, बिहार, नागपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक, सिंध, पंजाब, मद्रास आदि।

**10– लेखिका के कानों में किसके मधुर स्वर गूंजने लगते थे?**

उत्तर- लेखिका के कानों में चिड़ियों के मधुर स्वर गूंजने लगते थे।

**11– लेखिका को प्रकृति के जादू का अहसास कब होता है?**

उत्तर- फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने से लेखिका को प्रकृति के जादू का अहसास होता है।

**12- हम इतिहास में क्या पढ़ते हैं?**

उत्तर- हम इतिहास में विभिन्न देशों के बीते हुए समय की जानकारी पढ़ते हैं,जैसे हिंदुस्तान और इंग्लैंड का इतिहास।

**13- लेखक ने "प्रकृति के अक्षर" किन्हें कहा है?**

उत्तर:-लेखक ने प्रकृति के अक्षर चट्टानों के टुकड़े, वृक्षों, पहाड़ों, नदियों, समुद्र,जानवरों की हड्डियाँ आदि को कहा है।

## (बाल-रामायण)

**प्रश्न1- रावण ने सीता के किन गुणों की प्रशंसा की?**

उत्तर - रावण ने सीता के स्वरुप, संस्कार और साहस की प्रशंसा की ।

**प्रश्न2- सोने का हिरण कौन बना था?**

उत्तर- सोने का हिरण मारीच बना था ।

**प्रश्न3- सीता क्या सुनकर विचलित हो गई?**

उत्तर -सीता मायावी पुकार सुनकर विचलित हो गई ।

**प्रश्न4- लक्ष्मण के जाते ही कौन आ पहुँचा?**

उत्तर - लक्ष्मण के जाते ही रावण आ पहुँचा ।

**प्रश्न5- रावण किस वेश में आया था?**

उत्तर - रावण तपस्वियों के वेश में आया था ।

**प्रश्न6- सीता क्रोध से क्यों उबल पड़ी?**

उत्तर- सीता क्रोध से इसलिए उबल पड़ी क्योंकि राम की पुकार सुन कर भी लक्ष्मण शांत खड़े रहे ।

**प्रश्न7- सीता जी किसे -किसे अपनी सूचना रामजी तक पहुँचाने को कह रहीं थीं?**

उत्तर - सीता जी पशुओं, पक्षियों, पर्वतों, नदियों से अपनी सूचना रामजी तक पहुँचाने को कह रहीं थीं ।

**प्रश्न8- क्रोधित रावण ने जटायु के साथ क्या किया?**

उत्तर- क्रोधित रावण ने जटायु के पंख काट दिए ।

**प्रश्न9- जटायु की अंतिम क्रिया किसने की?**

उत्तर - जटायु की अंतिम क्रिया राम ने की।

**प्रश्न10- कबंध ने राम से क्या आग्रह किया?**

उत्तर - कबंध ने राम से आग्रह किया कि उसका अंतिम संस्कार राम करें।

**प्रश्न11- राम की बेचैनी क्यों बढ़ गई?**

उत्तर - जब राम के पुकारने पर भी कुटिया से सीता की कोई आवाज़ नहीं आई तो राम की बेचैनी बढ़ गई।

**प्रश्न12- पंपा सरोवर के पास किसका आश्रम था?**

उत्तर - पंपा सरोवर के पास मतंग ऋषि का आश्रम था।

**प्रश्न13- शबरी किसकी प्रतीक्षा में थी और क्यों?**

उत्तर- शबरी राम की प्रतीक्षा में थी क्योंकि मतंग ऋषि ने सबरी को बताया था कि एक दिन राम आश्रम जरूर आएँगे।

**प्रश्न14- शबरी ने राम की आवभगत किस प्रकार की?**

उत्तर- शबरी ने राम की सेवा की । उन्हें मीठे फल दिए और रहने की जगह दी।

## ➢ लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

**1- भारतीयों ने अंग्रेजों को दूर करने का निश्चय क्यों किया था?**

उत्तर- भारत कई सौ वर्षों तक गुलाम रहा। इस कारण यहाँ के लोग स्वतंत्रता के महत्त्व को भूल गए थे। इस आंदोलन से उन्हें स्वतंत्रता का महत्त्व को समझ में आ गया। उन्होंने यह भी महसूस किया कि फिरंगी धीरे-धीरे अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहे हैं। इस कारण भारतीयों ने अंग्रेज़ों को दूर

भगाने का निश्चय किया।

**2- ऐसी कौन-सी विशेषताएँ थीं जिनके कारण मराठे लक्ष्मीबाई को देखकर पुलकित हुए?**

उत्तर- रानी लक्ष्मीबाई वीर और साहसी नारी थीं उन्हें युद्ध कला में महारथ हासिल थी। नकली युद्ध व्यूह की रचना करना, खूब शिकार खेलना, सेना घेरना और दुर्ग तोड़ना उनके प्रिय खेल थे। लक्ष्मीबाई की इन विशेषताओं को देखकर मराठे बहुत पुलकित होते थे।

**3- लेखिका को किस काम से खुशी मिलती है?**

उत्तर- लेखिका को प्राकृतिक वस्तुओं को स्पर्श करने में खुशी मिलती है। वह चीज़ों को छूकर उनके बारे में जान लेती है। यह स्पर्श उसे आनंदित कर देता है।

**4- मनुष्य का स्वभाव क्या है?**

उत्तर- मनुष्य अपनी क्षमताओं की कदर नहीं करता। वह अपनी ताकत और अपने गुणों को नहीं पहचानता। वह नहीं जानता कि ईश्वर ने उसे आशीर्वाद स्वरूप क्या-क्या दिया है और उसका उपयोग नहीं कर सकता है। मनुष्य केवल उस चीज़ के पीछे भागता रहता है, जो उसके पास नहीं है। यही मनुष्य का स्वभाव है।

**5- लेखक ने संसार को पुस्तक क्यों कहा है?**

उत्तर- जैसे पुस्तक पढ़कर बहुत-सी जानकारी प्राप्त की जा सकती है, वैसे ही संसार में रहकर भी हमें बहुत-सी जानकारियाँ प्राप्त हो सकती हैं। इसलिए लेखक ने संसार को पुस्तक कहा है।

**6- लाखों–करोड़ों वर्ष पहले हमारी धरती कैसी थी?**

**उत्तरः–**लाखों करोड़ों वर्ष पहले हमारी धरती बहुत गर्म थी और उस पर कोई जानदार चीज नहीं रह सकती थी। इसी कारण उस समय धरती पर मनुष्यों का अस्तित्व नहीं था। धीरे–धीरे उसमें परिवर्तन होते गए और धरती में जानवरों और पौधे का जन्म हुआ।

**7– दुनिया का पुराना हाल किन चीज़ों से जाना जाता है?**

**उत्तरः–**दुनिया का पुराना हाल चट्टानों के टुकड़े, वृक्षों, पहाड़ों, सितारे, नदियों, समुद्र, जानवरों की हड्डियों आदि चीज़ों से जाना जाता है।

---